ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 28-12-2021

नैनीताल(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2021-12-28 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2021-12-29	2021-12-30	2021-12-31	2022-01-01	2022-01-02
वर्षा (मिमी)	10.0	8.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	8.0	6.0	6.0	8.0	9.0
न्यूनतम तापमान(से.)	-1.0	0.0	0.0	1.0	1.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	75	80	70	65	60
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	55	50	45	40	40
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6.0	6.0	6.0	6.0	6.0
पवन दिशा (डिग्री)	100	100	120	330	310
क्लाउड कवर (ओक्टा)	6	6	4	3	2

मौसम सारांश / चेतावनी:

आगामी पांच दिनों में, 28 व 29 दिसम्बर को कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है तथा शेष दिन मौसम साफ रहेगा। अधिकतम एवम् न्यूनतम तापमान क्रमश: 6.0 से 9.0 व -1.0 से 0.0 डिग्री सेल्सियस रहेगा| हवा के 6.0-9.0 किमी/ घंटे की गति से पूर्व-उत्तर-पूर्व व पूर्व-दक्षिण-पूर्व दिशा से चलने का अनुमान है। ईआरएफएस के अनुसार, 2 से 8 जनवरी के दौरान राज्य में वर्षा सामान्य से अधिक, अधिकतम तापमान सामान्य से कम व न्यूनतम तापमान सामान्य रहने का अनुमान हैं।

सामान्य सलाहकार:

किसान भाई पिछले सप्ताह के मौसम, मौसम पूर्वानुमान और मौसम आधारित कृषि सलाह प्राप्त करने के लिए "मेघदूत ऐप" तथा आकाशीय बिजली के पूर्वानुमान हेतु "दामिनी एप" डाउनलोड करें। मेघदूत व दामिनी ऐप को गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं) और ऐप सेंटर (आईओएस उपयोगकर्ताओं) से डाउनलोड किया जा सकता है| पशुओं को बारिश में भीगने से बचायें।

लघु संदेश सलाहकार:

आगामी पांच दिनों में, 28 व 29 दिसम्बर को कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है तथा शेष दिन मौसम साफ रहेगा। रसायनों का छिड़काव व सिंचाई मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर करें।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
सरसों	सरसों में माहुँ का प्रकोप होने पर थायमेथोक्जाम 25 डब्लू जी की 50-100 ग्रा0 मात्रा का 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। रसायनों का छिड़काव मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर करें।
गेहूँ	गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 25-30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45-50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही हैं साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते है।
मसूर की दाल	पिछले माह बोई गई फसल में निराई-गुड़ाई करें तथा मौसम को ध्यान में रखते हुए सिंचाई करें। दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20-25 दिन बाद और दूसरी 35-40 दिन बाद करें।
लहसुन	लहसून की फसल में निराई-गुड़ाई व नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
आलू	आलू के पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु, आलू उत्पादक किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि इस स्थिति में साइमोक्जेनिल + मैन्कोजेब अथवा डाइमिथोमार्फ + मैन्कोजेब अथवा फैनामिडान + मैन्कोजेब में से किसी एक सम्मिश्रण फफूदनाशी का 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। रोग की अत्याधिक तीव्रता बढ़ने पर ऊपर दिये गये किसी एक सम्मिश्रण फफूदनाशी का 10-15 दिन के अन्तराल में पुनः छिड़काव करें लेकिन किसान भाइयों से अनुरोध है कि एक सम्मिश्रण फंफूदनाशी का एक बार ही छिड़काव हेतु प्रयोग करें। सम्मिश्रण फंफूदनाशी के छिड़काव उपरान्त रोग की तीव्रता कम होने पर आवश्यकतानुसार मैन्कोजेब नामक फंफूदनाशी का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
अमरूद	अमरुद को कैंकर नामक बीमारी से बचाने हेतु, फल लगने के बाद कॉपर हाइड्रॉक्साइड का 2 ग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें। बेर के आकार फूल आने के 50 दिन बाद फलों की बैगिंग करते समय फोम नेट का उपयोग करने से फल को चोट लगने से रोका जा सकता है।
शिमला मिर्च	पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पॉलीहाउस के भीतर टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा की खेती की जानी हैं, में सफाई कर मिट्टी की खुदाई करें तथा फार्मलीन जैसे रसायन से उपचार करें।
सब्जी पीईए	मध्यम ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ ओला गिरने की संभावना रहती हो में तुरंत खेती कर तैयारी कर मटर की प्रजाति अरकिल या अन्य अगेती प्रजाति की बुवाई करें।
सेब	सेब में कैंकर रोग की रोकथाम के लिए कटाई-छटाई के दौरान रोगी एवं कीट ग्रसित अथवा अवांछनीय शाखाओ को काटकर कीटनाशक तथा फफूँदी नाशक रसायनो का छिडकाव करे।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान - नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं। पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
गाय	इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।